

## 07. सखिया एवं सबद

### सखियाँ

**प्र.1 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?**

**उत्तर** मानसरोवर का साधारण और प्रतीकात्मक अर्थ निम्नलिखित है

**साधारण अर्थ** मानसरोवर हिमालय पर्वत में स्थित ऐसा पवित्र सरोवर है, जिसमें हंस विचरण करते हैं।

**प्रतीकात्मक अर्थ** कबीरदास के मानसरोवर का प्रतीकात्मक अर्थ पवित्र मन या मानस है, जिसमें आत्मा रूपी हंस विचरण करता है।

**प्र.2 कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?**

**उत्तर** कवि के अनुसार, सच्चे प्रेम की कसौटी वही है, जिसके मिलने मात्र से ही विष अमृत के समान हो जाता है, भक्त को ईश्वर की प्राप्ति होने पर बुरी भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं अर्थात् दुष्कर्मों उस सच्चे प्रेमी के संपर्क में आते ही सत्कर्मों बन जाते हैं।

**प्र.3 तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है?**

**उत्तर** कवि कबीर ने तीसरे दोहे में अनुभव से प्राप्त सामाजिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान को महत्व दिया है। वे इस ज्ञान को हाथी के समान सशक्त एवं समर्थवान मानते हैं। अनुभव से प्राप्त यह ज्ञान उनका सहज ज्ञान है, जिसमें झूठ एवं आडंबर का कोई स्थान नहीं है।

**प्र.4 इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?**

**उत्तर** कबीरदास के अनुसार, इस संसार में सच्चा संत वही है, जो सामाजिक भेदभाव, तर्क-कुतर्क एवं वाद-विवाद के झमेले में पड़ने के बजाय निष्पक्ष होकर परमात्मा का ध्यान करे। सच्चा संत तर्क-वितर्क, वादों-प्रतिवादों आदि से मुक्त रहता है।

**प्र.5 अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस प्रकार की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?**

## 07. सखिया एवं सबद

उत्तर अंतिम दो दोहों में कबीर ने दो प्रकार की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है

(i) प्रथम दोहे में उन्होंने धार्मिक एवं सांप्रदायिक संकीर्णता की ओर संकेत किया है।

(ii) अंतिम दोहे में उन्होंने सामाजिक एवं जातिगत संकीर्णता की ओर संकेत किया है।

**प्र.6 किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

उत्तर किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। यदि उच्च कुल का व्यक्ति ऐसे कर्म करता है, जो समाज विरोधी हों, तो उसे श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। वैसे ही निम्न कुल का व्यक्ति यदि ऐसे श्रेष्ठ कर्म करता है, जो समाज एवं व्यक्तियों के हित में हों, तो वह व्यक्ति महान् होता है। उदाहरणार्थ- रावण अपने कर्मों से नीच तथा राम अपने कर्मों से महान सिद्ध हुए।

**प्र.7 काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए**

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भँकन दे झख मारि।।

उत्तर कबीरदास ने इस साखी में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है, जिसमें उन्होंने ज्ञान रूपी हाथी को संसार रूपी कुत्तों के भौंकने के पश्चात् अपनी सहज चाल में चलने की सलाह दी है। उन्होंने ज्ञान को हाथी से, सहज भक्ति को हाथी की स्वाभाविक चाल से, निंदक संसार की कुत्ते से तथा निंदा की भौंकने से तुलना की है।

तत्सम एवं तद्भव शब्दों और 'झख मार' मुहावरे तथा उदाहरण अलंकार का विलक्षण प्रयोग इस दोहे में किया गया है।

**सबद**

**प्र.8 मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?**

## 07. सखिया एवं सबद

**उत्तर** मनुष्य ईश्वर को मंदिर-मस्जिद, काबा कैलाश, कर्मकांडों, तंत्र-साधना, योग-वैराग्य आदि में ढूँढता फिरता है। कहने का तात्पर्य यह है कि धार्मिक कर्मकांडों एवं बाह्य आडंबरों में ईश्वर को ढूँढना व्यर्थ है, क्योंकि ईश्वर तो निर्मल भावना वाले प्राणियों या व्यक्तियों की अंतरात्मा के अलावा कण-कण में बसता है।

**प्र.9 कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?**

**उत्तर** कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के कई प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है। लोक मान्यता है कि ईश्वर या तो मंदिर में मिलता है या मस्जिद में। वह काबा और कैलाश पर्वत में निवास करता है। वह कई तरह के धार्मिक कर्मकांड एवं योग-साधनाओं तथा संन्यास-साधना से प्राप्त होता है। कबीरदास ने इन सारी मान्यताओं का खंडन किया है।

**प्र.10 कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?**

**उत्तर** कबीर के अनुसार, ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। वह हर प्राणी में अंतर्निहित है। वह प्रत्येक प्राणी की साँसों में बसा हुआ है, इसलिए कबीरदास ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' कहा है। कवि कहता है कि यदि तुम ईश्वर को खोजना चाहते हो, तो उसे अपने भीतर ही खोजो।

**प्र.11 कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?**

**उत्तर** कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से इसलिए की है, क्योंकि शीतल मंद हवा में इन सांसारिक मान्यताओं को समूल नष्ट करने की शक्ति नहीं होती। आँधी ही इन्हें नष्ट कर सकती है। कबीर जिस परंपरा के कवि थे उसमें सामाजिक भेदभाव, धार्मिक कर्मकांडों को स्पष्ट रूप से नकारा गया है। वे इन सांसारिक भ्रमों को ईश्वर भक्ति की सबसे बड़ी बाधा मानते हैं।

**प्र.12 ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?**

## 07. सखिया एवं सबद

उत्तर ज्ञान की आँधी आने से भक्त का जीवन भ्रम रहित हो जाता है। माया के मोह से भक्त का हृदय मुक्त हो जाता है और उसे ईश्वर का साक्षात्कार होने लगता है। ज्ञान की आँधी से भक्त की अज्ञानता और विषय-वासना नष्ट हो जाती है। शरीर कपटरहित हो जाता है। आँधी के पश्चात् बरसने वाले प्रेम जल से भक्त सराबोर हो जाता है और ईश्वर मिलन के संपूर्ण मार्ग प्रशस्त होने लगते हैं।

### प्र.13 भाव स्पष्ट कीजिए

(क) हिति चित्त की द्वै यूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

(ख) आँधी पीछे जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।

उत्तर (क) कबीरदास जी कहते हैं कि जब ज्ञान रूपी आँधी आती है, तो मनुष्य भौतिक जीवन की मोह माया से अधिक दिनों तक जुड़ा नहीं रह सकता। ज्ञान रूपी आँधी के आगमन से मन एवं हृदय रूपी वे स्तंभ, जो छप्पर को टिका कर रखते हैं, गिर जाएँगे अर्थात् मन और हृदय की द्वंद्व की स्थिति समाप्त हो जाएगी।

(ख) भ्रम का छप्पर ज्ञान की आँधी से उड़ जाने के पश्चात् जिस प्रेम रस की वर्षा होती है, उस ईश्वर के प्रेम रूपी रस से भक्त भीग उठा और उसका रोम-रोम ईश्वरमय हो गया।

### रचना और अभिव्यक्ति

प्र.14 संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर छात्र स्वयं करें।

Sources:

Govindo Sir – Hindi Teacher, BMSSS

Hindi Guide Book